शोधकर्ता पुरुष हो, तो चूहों को दर्द कम होता है

हाल ही में *नेचर मेथड्स* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन का निष्कर्ष है कि चूहों पर प्रयोग करते समय यदि शोधकर्ता पुरुष हो, तो प्रायोगिक चूहों को दर्द कम होता है, बनिस्बत जब शोधकर्ता महिला हो। यह अजीब-सा निष्कर्ष जंतु शोध के परिणामों को देखने का नज़रिया बदल सकता है।

इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता मैकगिल विश्वविद्यालय, कनाडा के जेफ्री मोगिल थे। उनको लगता था कि अनौपचारिक रूप से यह बात कई बार कही जाती थी कि प्रायोगिक जंतु उस समय दर्द का इज़हार कम करते थे जब शोधकर्ता उसी कमरे में मौजूद हो। मगर यह मात्र कही-सुनी बात थी, किसी ने इसकी जांच करने की कोशिश नहीं की थी। मोगिल ने इसी बात की जांच करने की ठानी।

मोगिल की टीम ने चूहों को ऐड़ी में एक इंजेक्शन देकर उनके दर्द का मापन किया। यह काम या तो शोधकर्ता की उपस्थिति में किया गया या उसकी अनुपस्थिति में। अनुपस्थिति में प्रयोग करने का मतलब था कि शोधकर्ता इंजेक्शन लगाकर फौरन कमरे से चले जाते थे। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जंतुओं में दर्द का इज़हार उस समय 40 प्रतिशत तक कम रहा जब शोधकर्ता पुरुष था बजाय महिला के।

यहां तक देखा गया कि यदि कमरे में किसी पुरुष द्वारा एक दिन पहले पहना गया टी शर्ट रख दिया जाए तो भी दर्द का इज़हार कम होता है। इसके अलावा, बगलों में से रसायन लेकर आसपास रखने पर भी चूहों में दर्द का इज़हार कम था। गौरतलब है कि पुरुषों और महिलाओं की बगलों के स्राव का रासायनिक संघटन थोड़ा अलग-अलग होता है।

दूसरी ओर, महिलाओं की उपस्थिति या अनुपस्थिति में दर्द के इज़हार में कोई फर्क नहीं देखा। आश्चर्यचकित होकर शोधकर्ताओं ने थोड़ी और खोजबीन की। पता चला कि जो भी गंधयुक्त उद्दीपन (उकसावा) था वह जंतुओं के दर्द की क्रियाविधि पर सीधे असर नहीं डालता था, जैसा कि दर्द निवारक दवाइयां करती हैं। दरअसल, इन गंधों का असर तो खून में एक हॉरमोन कार्टिकोस्टेरोन की मात्रा में वृद्धि के रूप में दिखाई दिया। कार्टिकोस्टेरोन को तनाव-हॉरमोन भी कहते हैं और यह तनाव को बढ़ाता है।

शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि पुरुषों की उपस्थिति में चूहे ज़्यादा तनावग्रस्त महसूस करते हैं और यह तनाव उनके दर्द के इज़हार को बदल देता है।

वैसे अपने अध्ययन को आगे बढ़ाते हुए मोगिल व उनके साथियों ने यह भी देखा कि सिर्फ पुरुष ही नहीं, अन्य जंतुओं के नर की उपस्थिति भी इसी तरह का असर पैदा करती है।

मोगिल का मत है कि इसका अर्थ यह है कि दर्द सम्बंधी अध्ययनों के परिणामों को समझते हुए ज़्यादा सावधानी की ज़रूरत है। जैसे उन्होंने अपनी ही प्रयोगशाला में हो चुके ऐसे पूर्व अध्ययनों की छानबीन की तो पता चला कि पुरुष शोधकर्ताओं और महिला शोधकर्ताओं द्वारा किए गए प्रयोगों में दर्द को लेकर स्पष्ट अंतर नज़र आता है। उनको लगता है कि इतना तो किया ही जा सकता है कि ऐसे अध्ययनों के साथ यह अनिवार्य तौर पर बताया जाए कि शोधकर्ता पुरुष था या स्त्री। ***(स्रोत फीचर्स)***